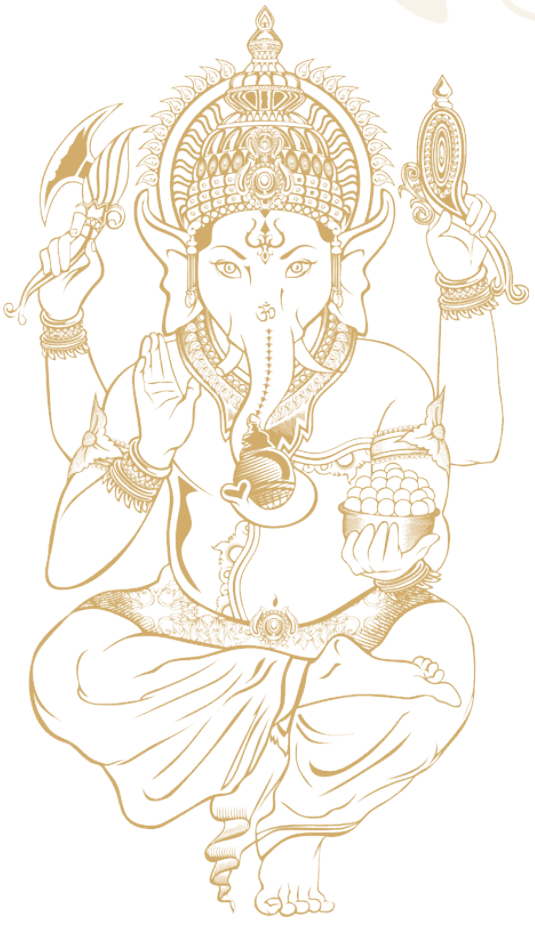

Anshul kota

V

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121879502

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
28/04/1998	जन्म तिथि	12/09/1998
मंगलवार	दिन	शनिवार
घंटे 18:02:00	जन्म समय	18:40:00 घंटे
घटी 30:22:12	जन्म समय(घटी)	31:12:47 घटी
India	देश	India
Kota	स्थान	Kota
25:11:00 उत्तर	अक्षांश	25:11:00 उत्तर
75:58:00 पूर्व	रेखांश	75:58:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:08	स्थानिक संस्कार	-00:26:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:53:07	सूर्योदय	06:10:53
18:54:40	सूर्यास्त	18:33:42
23:49:53	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:11

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
चन्द्र 7वर्ष 11मा 24दि		03:22:48	तुला	लग्न	कुंभ	29:03:40	चन्द्र 3वर्ष 4मा 14दि	
राहु		14:11:32	मेष	सूर्य	सिंह	25:44:02	राहु	
22/04/2013		12:41:20	वृष	चंद्र	वृष	18:50:10	26/01/2009	
22/04/2031		17:38:02	मेष	मंगल	कर्क	20:39:21	26/01/2027	
राहु	03/01/2016	18:38:10	मीन	बुध	सिंह	14:01:36	राहु	09/10/2011
गुरु	29/05/2018	25:13:18	कुंभ	गुरु व	कुंभ	29:41:41	गुरु	04/03/2014
शनि	04/04/2021	00:15:27	मीन	शुक्र	सिंह	13:15:55	शनि	08/01/2017
बुध	22/10/2023	01:24:36	मेष	शनि व	मेष	09:08:01	बुध	28/07/2019
केतु	09/11/2024	14:50:57	सिंह व	राहु व	सिंह	07:31:05	केतु	15/08/2020
शुक्र	09/11/2027	14:50:57	कुंभ व	केतु व	कुंभ	07:31:05	शुक्र	15/08/2023
सूर्य	03/10/2028	18:45:43	मक	हर्ष व	मक	15:29:45	सूर्य	09/07/2024
चन्द्र	04/04/2030	08:19:19	मक	नेप व	मक	05:46:21	चन्द्र	08/01/2026
मंगल	22/04/2031	13:37:45	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	11:39:57	मंगल	26/01/2027

लग्न-चलित

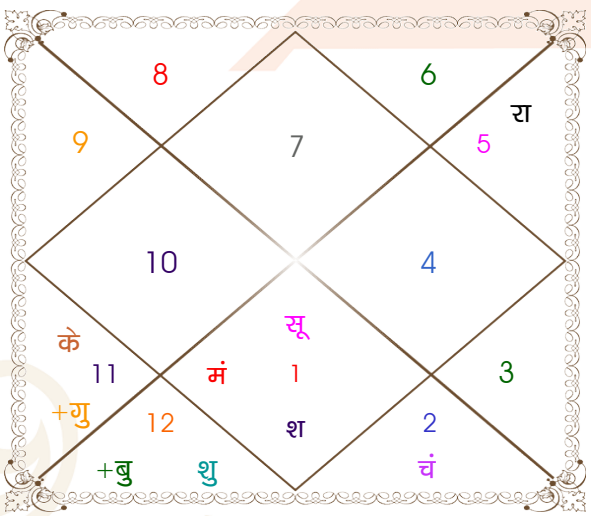

लग्न-चलित

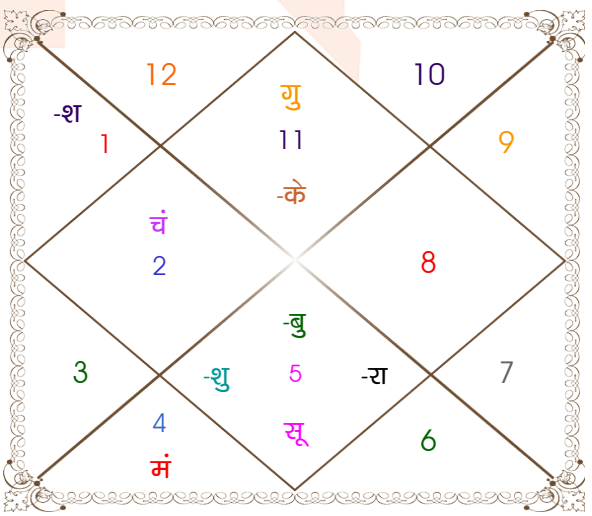

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	सर्प	सर्प	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृष	वृष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि ।दीनस ।वजं का नक्षत्र रोहिणी है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि V का नक्षत्र रोहिणी है।

।दीनस ।वजं का वर्ग गरूड़ है तथा V का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूV मिलान के अनुसार ।दीनस ।वजं और V का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

।दीनस ।वजं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है। क्योंकि मंगल ।दीनस ।वजं कि कुण्डली में सप्तम् भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल ।दीनस ।वजं कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

V मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कV जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कV जाता है।

क्योंकि राहु V कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कV जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि V कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कV जाता है।

।दीनस ावजं तथा V में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूV एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।